an>

Tilte: Need for proper action plan to rehabilitate scheduled Tribes land oustees following construction of Badua Dam in Banka district of Bihar.

श्री जय प्रकाश नारायण यादव (बाँका) : देश भर के सभी प्रान्तों में जहाँ जंगली व पहाड़ी क्षेत्र हैं, में प्रान्त की सरकारें ने जल प्रबंधन/जल संचय योजना के तहत स्थानीय मूलवासी खासकर अनुसूचित जनजाति की जमीनों को लेकन डैम या नहर का निर्माण किया गया जिसके कारण उन्हें विस्थापित होना पड़ा । आज भी प्रान्त की सरकारें पुनः अनुसूचित जनजाति के लोगों की जमीन ले रही है और वह विस्थापित हो रहे हैं। एक बार विस्थापन के बाद भी दूसरी विस्थापन की प्रक्रिया जारी है । इसका ताजा उदाहरण बिहार राज्य के बांका जिले में 20 वर्ष पूर्व अनुसूचित जनजाति के लोगों को बदुआ डैम के निर्माण हेतु विस्थापित किया गया था पुनः आज सरकार उस स्थान से भी विस्थापित कर उनकी जमीनें लेकर बांका जिले से जमुई जिले के वन विभाग को दे रहा है । बार-बार विस्थापन की प्रक्रिया से यह समाज रोजी-रोटी का मोहताज है । बांका बदुआ डैम्प के विस्थापित परिवार लगार धरने व प्रदर्शन कर रहे हैं ।

अतः मैं भारत सरकार से मांग करता हूं कि बदुआ डैम बांका बिहार के अनुसूचित जनजाति परिवार के साथ-साथ देश के सभी प्रान्तों के अनुसूचित जनजाति परिवार की जमीनें लेने के पूर्व सरकार ठोस कार्यवाही करे ताकि विस्थापित परिवार का जीवन-यापन हेतु कठिनाई न हो ।

माननीय अध्यक्ष : कॉलिंग अटैंशन। योगी आदित्यनाथ।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा) : माननीय अध्यक्ष जी, कॉलिंग अटैंशन लीजिए, हमें कोई दिक्कत नहीं है। मैं कहना चाहता हूं कि इस सदन को मालूम नहीं है कि कौन से विषय आने वाले हैं और इस सप्ताह में किस विषय पर चर्चा होने वाली है?...(व्यवधान) इसके बारे में हमें कुछ मालूम नहीं है। यूजअली शुक्रवार या वीरवार को बिजनेस एडवाइजरी कमेटी में आप कहते हैं कि किस विषय पर हमें बोलना है। ...(व्यवधान) हम जानना चाहते हैं क्योंकि हमें इस विषय के बारे में पता नहीं है। हमें दिक्कत होती है जब पता नहीं होता है कि किस विषय पर बोलना है, कौन सा विषय कब आएगा, किस समय पर होगा? अगर यह मालूम नहीं होता है तो बहुत मुश्किल हो जाती है क्योंकि डिसकशन की तैयारी भी करनी पड़ती है। इधर के ही नहीं उधर के भी माननीय सदस्यों ने बोलना होता है।

हम इतनी डिसकशन करते हैं, रूल 193 पर कम से कम चार दिन से डिसकशन चल रही है जबकि बजट के लिए दो दिन थे। बाढ़ और सूखे पर चर्चा के लिए चार दिन रखे गए।...(व्यवधान) ऐसे अनेक विषय हैं जो हमने आपके सामने रखे हैं। हो सकता है किसी की डेट आगे हो और किसी की पीछे हो। आपको डिसक्रीशन है, कम से कम जो महत्व के विषय हैं, उनको समय देकर उन पर चर्चा लीजिए। लेकिन इसके बजाय एक ही विषय को बढ़ाया जा रहा है। हमारे सामने मीटिंग में चार घंटे फिक्स हुए थे और बाद में छः घंटे हो गए। लेकिन छः घंटे होने के बाद भी एक ही विषय पर चर्चा चल रही है। हमने भी बहुत से विषयों पर नोटिस दिया है लेकिन उसके बारे में कोई चर्चा नहीं है। अगर इस ढंग से हाउस चलेगा तो बहुत मुश्किल हो जाएगी। हो सकता है आप नाराज हो जाएं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैं नाराज नहीं हूं।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : महोदया, हमें बहुत मुश्किल हो रही है। बहुत बार रूल्स के मुताबिक बात करते हैं तो उसको देखा नहीं जाता है। जब कभी हम कहते हैं तो कहा जाता है कि रूल्स में कहां है। कोरम नहीं होता लेकिन रूल्स में कोरम जरूरी है। कोरम नहीं होता तो हाउस एड्जर्न होता है। कैबिनेट मिनिस्टर नहीं रहते फिर भी चर्चा होती रहती है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : ऐसा नहीं है।

â€¦(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : हम कोआपरेट करते हैं। लेकिन उस वक्त रूल की याद नहीं आती। जब हम बात कहते हैं, क्लेरिफिकेशन पूछते हैं तो उधर से सरकार के लोग उठकर कहते हैं कि कौन से रूल में बात कह रहे हैं।

माननीय अध्यक्ष : आप एक बात तो बताइए ताकि मैं उसका एक्सपलेनेशन दूं।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : महोदया, मैं ज्यादा लंबी बात सोचना नहीं चाहता हूं लेकिन ऐसी चीजें हो रही हैं। इतने विषय हैं, आपकी डिसक्रीशन में हैं, आप कोई भी विषय चूज़ कीजिए, रोज एक विषय पर बोलने दीजिए, हमें कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन एक ही विषय पर उन्हीं का ही सब्जेक्ट आना, अच्छा नहीं है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : माननीय खड़गे जी और सदन को भी मालूम होना चाहिए, ऐसा नहीं है कि आप लोगों से चर्चा नहीं होती है। आपके लोग भी आते हैं और अलग विषय अलग तरीके से देते हैं। अभी कॉलिंग अटैंशन इसीलिए लिया है क्योंकि इनसेफेलाइटिस को लेकर सभी सदस्यों ने बार-बार आकर कॉलिंग अटैंशन दिया था और कुछ लोगों 193 की बात की थी। यह विषय बहुत आवश्यक है, तुरंत आवश्यक है। आज पहले यह विषय बार-बार कहने के कारण लिया गया है। आपसे भी चर्चा हुई थी और आपने भी कुछ रूल 193 सजैस्ट किए थे, मैं आपसे उसकी भी बात करूंगी। ऐसा नहीं है कि आपके विषय नहीं लेने हैं। सूखे का विषय आपने ही बताया था। आपके कहने से दोनों विषय नियम 193 में लाए हैं। आज उसी को ही कम्पलीट होना था लेकिन इस बीच में इस बात का भी आग्रह आया इसलिए कालिंग अटैंशन डाला है और कॉलिंग अटैंशन का पहले प्रियारिटी देनी भी चाहिए। इनसेफेलाइटिस के बारे में सबने आग्रह किया था। ऐसा नहीं है कि वे विषय नहीं लेने हैं। अभी यह कॉलिंग अटैंशन ले रहे हैं।

â€¦(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : सरकार के पास कोई बिजनेस नहीं है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : ऐसा नहीं है। आप उसकी चिंता मत कीजिए।

â€¦(व्यवधान)